R. Nand M.A III Sem 21/10/2021

2

## मनोविदलता के कारण (Etiology of schizophrenia) –

मनोविदलता के कारणों के संबंध में मनोविज्ञानी एक मत नहीं हैं। मनोविदलता के कारणों की व्याख्या करने के लिए कई तरह के विचार धाराएं उपलब्ध हैं ~~जिन्हें कोई कारणों दोनों को मिला गया है~~ निम्नांकित तीन भागों में बाँट का अध्ययन किया जाना समीचीन होगा –

(A) जैविक कारक :–

जैविक कारकों को मनोवैज्ञानिकों द्वारा दो भागों में बाँट का अध्ययन किया गया है –

(a) जननिक कारक (Genetic factors) :–

कुछ व्यक्तियों में मनोविदलता कारण एक जैविक पूर्वप्रवृत्ति (Biological predisposition) का जन्म से होना होता है। जब ऐसी पूर्वप्रवृत्ति वे अपने माता-पिता प्राप्त करते हैं और डायथेसिस तनाव मॉडल (Diathesis stress model) के अनुसार जब भी ऐसे लोगों को किशोरावस्था में अत्यधिक तनाव का सामना करना पड़ता है तो उनमें वह पूर्वप्रवृत्ति विकसित हो कर मनोविदलता का रूप ले लेती है। इस व्याख्या के समर्थन में गॉटेसमैन (Gottesman, 1991) तथा हॉल्जमैन एवं मैथीसी (Holzman & Matthysse, 1990) द्वारा व्यापक अध्ययन निम्नांकित चार प्रकार से किया गया और निष्कर्ष उपरोक्त विचार धारा के समर्थन में पाया गया –

(i) मनोविदलता के रोगियों के संबंधियों का अध्ययन।

(ii) ऐसे जुड़वाँ बच्चे जो मनोविदलता के रोगी रहे हों।

(iii) मनोविदलता के ऐसे रोगी जो [illegible] रहे हैं।

(iv) गुणसूत्रीय मैपिंग।

इसीलिए आनुवंशिक (माता-पिता [illegible]) को मनोविदलता का एक मुख्य कारक माना गया है।

(b) जैविक कारक (Biological factors) –

को विचित्र प्रकार से घण्टों मोड़ कर खड़े रहते हैं या बैठ जाते हैं। एक ही मुद्रा या आसन में कई दिनों तक बैठे रहते हैं। विचित्र रूप से हँसते हैं तथा टकटकी लगाकर शून्य की ओर टकटकी लगाकर शून्य की ओर काफी देर तक देखते रहते हैं।

(च) भाषा विकृतियाँ (language disorders)

मनोविदलता से पीड़ित रोगियों में भाषा संबंधी विकृतियाँ भी पाई जाती हैं। इसके कुछ रोगी स्वच्छन्द मौन रहते हैं, तो कुछ लच्छेदार वाक्यों का प्रयोग करते हैं। परन्तु उनकी भाषा, शब्द और उच्चारण में तालमेल का पूर्णतः अभाव पाया जाता है। उनके वाक्य निरर्थक होने के साथ-साथ अधूरे भी होते हैं। कभी-कभी एक ही वाक्य को घण्टों दुहराते पाए जाते हैं। इनकी जबान पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं होता है। कभी-कभी वे नए-नए शब्दों का निर्माण भी करते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता है।

(छ) लेखन-संबंधी विकृतियाँ (writing disorders)

इसके रोगियों में लेखन संबंधी विकृतियाँ भी पाई जाती हैं। कुछ रोगी सालों तक कुछ नहीं लिखते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो बराबर कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं। उनके लेखन में विचारों की अस्थिरता और शैली की गुमराहपूर्णता पाई जाती है। पीड़ित व्यक्ति अपने विचारों का केवल भाषा के माध्यम से ही प्रस्तुतीकरण नहीं करता बल्कि प्रतीकों, चिन्हों, रेखाओं का भी प्रयोग करता है। साथ-ही-साथ व्याकरण और विराम चिन्ह आदि का भी ध्यान इनके द्वारा नहीं दिया जाता है।